



22122307



HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 14 May 2012 (afternoon)
Lundi 14 mai 2012 (après-midi)
Lunes 14 de mayo de 2012 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'Épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

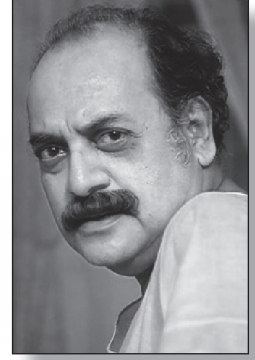
CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क

गरम मिजाज़ उत्पल दत्त से विनोद शंकर शुक्ल की नरम बातें

पिछले दिनों पुरानी डायरी के पन्ने पलटते-पलटते एक पन्ने पर अचानक निगाह अटक गयी। पन्ने में 10 जनवरी 1993 की एक मुलाकात का जिक्र था। एक महत्वपूर्ण नाटककार और अभिनेता से एक छोटी-सी मुलाकात थी जिसकी मिठास बहुत गहरी थी, जो इतने वर्षों के बाद भी याद रही। मोटे फ्रेम के चश्मे के अन्दर से झांकती उत्पल दत्त की आंखों में जिंदादिली की असामान्य चमक थी। आवाज़ में ऐसा करारापन था कि बिना माइक्रोफोन के दूर तक पहुँच सकती थी। उनसे बातचीत के कुछ अंश:



आप बड़े कलफदार ठहाके लगते हैं। आपकी हंसी का स्रोत क्या है?

हँसते-मुस्कराते लोग लगातार दुर्लभ होते जा रहे हैं। मुझे ऐसे लोग भी मिलते हैं, जो महीने में एक बार केवल वेतन के दिन हँसते हैं। देश में हँसी को बचाने के लिए आन्दोलन की सख्त ज़रूरत है। ईश्वर की इबादत का एक तरीका यह भी हो सकता है कि इंसानों को हँसाओ।

लोग कहते हैं आपको नाटक का जुनून है?

ठीक कहते हैं। जुनून के बिना आप श्रेष्ठ कुछ नहीं दे सकते। कलाकार को सारा व्यक्तित्व खर्च कर देना पड़ता है। वह कुछ भी बचाकर नहीं रख सकता अपने पास! नाटक के सफल होने पर जो तृप्ति मिलती है, उसकी तुलना केवल ब्रह्मानंद से की जा सकती है।



अब तक जो किया है, उससे संतुष्ट हैं?

खुशी होती है कि कलाकार का जीवन मिला है, राजनीतिज्ञ का नहीं। दिल भी मुझे अंतरराष्ट्रीय मिला है। सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर में है। सच्चा धर्मनिरपेक्ष भी हूँ, पानी मिला नहीं।

किन्तु अब तो उत्पल दत्त की स्मृतियाँ मात्र शेष हैं। और उन स्मृतियों के बारे में यही कहा जा सकता है- जिंदगी तो जेठ का तपता हुआ मैदान है और तेरी याद की बौछार सावन की तरह।

कादम्बिनी (अप्रैल 2010)

पाठांश ख

भोजन घटाए रक्तचाप

शहरी भारतीयों में 40 फीसदी से ज्यादा लोग उच्च रक्तचाप से पीड़ित हैं. जानिए रक्तचाप सम्बन्धी विकार कितना घटक साबित हो सकता है...

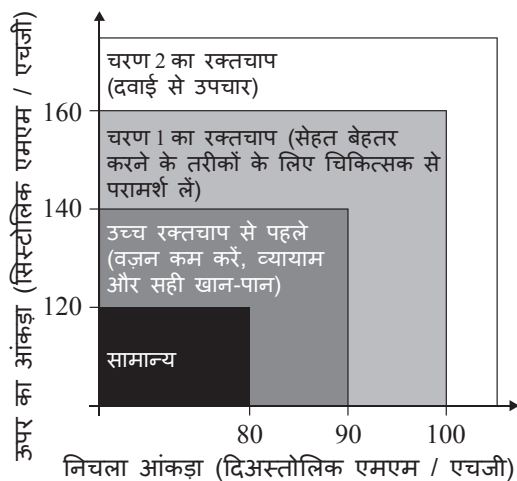
16 % उच्च रक्तचाप से पीड़ित भारतीयों को गंभीर हृदयरोग हो जाते हैं.

24 % गंभीर मायोकार्डियल इन्फेक्शन (हृदयाघात) से पीड़ित हो जाते हैं

29 % उच्च रक्तचाप के पीड़ितों को पक्षाघात हो जाता है

18 % उच्च रक्तचाप के कारण मोतियाबिंद हो जाता है

तो क्या आपका रक्तचाप है नियंत्रण में?



वजन कम करने वाले और सेहत बनाने वाले खानपान की एक लम्बी सूची है जिसमें शामिल हुआ है ऐसा खानपान जो रक्तचाप को कम करता है। इस आहार की खासियत है कि इसमें नमक नहीं होता। इस आहार में एंटी ओक्सिडेंट होते हैं और ये खराब माने जाने वाले एलडीएल (लो डेनसिटी लिपोप्रोटीन) कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होते हैं। यह आहार महत्वपूर्ण पोषक तत्वों, रेशों और इस तरह के गुणों से भरपूर होता है। और इन्हीं की वजह से यह आहार सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए खान पान का अच्छा तरीका बन गया है जिसे हमें दैनिक जीवन में अपनाना चाहिए। वैसे तो औसत आहार में भी पोषक तत्व मौजूद हैं पर इस आहार की तुलना में रक्तचाप से लड़ने वाले आहार में अच्छी-खासी मात्रा में इलेक्ट्रोलाइट, पोटेशियम, कैल्शियम, और मैग्नीशियम मौजूद होते हैं।

आहार योजना

हरी भरी चीजों से भरपूर, कम नमक वाला ये आहार हृदय की सेहत के लिए अच्छा है



मिठाईयाँ, संयमित मात्र में लें



सूखे मेवे, बीज और तेल अच्छी वसा के लिए जरूरी



कम वसा वाले दुग्ध उत्पाद, मछली, अंडे, हल्का गोष्ठ तीसरे चरण पर



ब्रेड और अनाज, बेहतर होगा साबुत अनाज लेना, दूसरे चरण पर



सब्जियां और फल आधार हैं, ज्यादा से ज्यादा सेवन करें

ईण्डिया टुडे (14 अप्रैल 2010)

पाठांश ग

एक दिन खत्म हो जाएगा इंटरनेट



आज इंटरनेट और ई-मेल हमारे दैनिक जीवन से करीब-करीब उसी तरह जुड़ गए हैं जैसे बिजली और पानी। लेकिन एक दिन अचानक सुनने को मिले कि इंटरनेट हमेशा के लिए खत्म हो गया तो?

कुछ वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि दो-तीन साल बाद ऐसा हो सकता है। इंटरनेट का प्रयोग इतना ज्यादा बढ़ गया है कि आज वह अपनी अधिकतम क्षमता पर काम कर रहा है। ऑनलाइन वीडियो, एनिमेशन और शक्तिशाली सॉफ्टवेयरों की मांग इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि उससे इंटरनेट की धमनियां अवरुद्ध हो रही हैं। इंटरनेट में दुनिया के कम्प्यूटरों पर सूचनाओं का प्रवाह “बैंडविड्थ” के ज़रिये होता है बैंडविड्थ को समझने के लिए आप एक पाइप की कल्पना कर सकते हैं जिसके भीतर से पानी बहता है। इंटरनेट पर इतनी सामग्री यहाँ से वहाँ जा रही है कि उसका वेग इन पाइपों से संभाले नहीं संभल रहा। इस समस्या का सबसे बड़ा कारण वीडियो फाईलें हैं, जो इन दिनों बहुत लोकप्रिय हो रहीं हैं। इंटरनेट पर परिवहन किये जा रहे आँकड़ों का करीब आधा हिस्सा इन्हीं के खाते में जाता है। हालांकि हर दो-तीन साल में इंटरनेट की बैंडविड्थ दोगुनी हो जाती है, लेकिन मांग उससे भी ज्यादा गति से बढ़ रही है। ऊपर से वायरस और स्पाई वेयर से इंटरनेट पर अनधिकृत सन्देश भेजे जा रहे हैं। वह भी अरबों खरबों की संख्या में।

इंटरनेट के अस्तित्व के सामने एक और चुनौती है, आईपी एड्रेसों के खत्म होने की। 1981 में जब इन की वर्तमान व्यवस्था लागू हुई थी तब इस व्यवस्था को तैयार करने वाले वैज्ञानिकों ने अपनी पूरी कल्पना शक्ति लगाकर सोचा कि विश्व में चार अरब से ज्यादा आईपी एड्रेसों की ज़रूरत शायद नहीं पड़ेगी। उन्हें क्या पता था कि इंटरनेट इतना ज़बरदस्त लोकप्रिय होगा कि हर घर और दफ्तर तक पहुँच जाएगा।

अगर वाकई इंटरनेट के लिए क़यामत का दिन आ गया तो क्या होगा? इंटरनेट इंजीनियरिंग टास्क फ़ोर्स नामक संस्थान उस दिन से निपटने की तैयारी में जुटा हुआ है। उसने आईपी एड्रेस की एक वैकल्पिक व्यवस्था विकसित की है, जिसे आईपीवी-6 कहा जाता है। तब सारे के सारे इंटरनेट और उससे जुड़े हर कम्प्यूटर को नई व्यवस्था को अपनाना होगा जिसमें खरबों रुपये का खर्च आएगा। लेकिन अच्छी बात यह है कि तब हमारे पास इतने आईपी एड्रेस हो जाएंगे कि शायद हम कभी भी इस्तेमाल न कर पाएं।

नंदन दिसम्बर (2010)

पाठांश घ

छतों पर ग्रीन वर्ल्ड

छतों का हमारे यहाँ काफी महत्त्व होता था। लोग शाम को छतों पर आकर मंद-मंद बहती हवा का आनंद लेते। कभी पापड़ सुखाये जाते तो कभी ये ही छतें आसमान में ऊंची-ऊंची लहराती पतंगों की गवाह बनतीं, लेकिन अब वे दिन शायद बीती बात हो गए। अब भागमभाग ज़िंदगी में छतें एक तरफ उदास और तनहा होती जा रही हैं तो दूसरी ओर ग्लोबल वार्मिंग के असर से भी ये अछूती नहीं हैं।



हमारे बड़े शहरों में वायु प्रदूषण भी एक बड़ी समस्या है। महानगरों में ज़मीन खत्म हो चुकी है। पार्क गिने चुने हैं और लोगों को कंक्रीट के जंगल में ताज़ी हवा तक नसीब नहीं है। दुनिया भर में कम होती ज़मीनों और पर्यावरण के प्रति जागरूकता ने छतों को वह महत्त्व प्रदान कर ही दिया है जो बहुत पहले हो जाना चाहिए था। दुनिया के बड़े शहरों की तस्वीर बदल रही है और तेज़ी से ऊंची बिल्डिंगों की बालकनी और उपरी छतें हरी होती जा रही हैं। पर्यावरणविद् इसे प्रकृति का शहरीकरण मानते हैं कि कम से कम इसी बहाने शहरी लोग प्रकृति के करीब आने लगे हैं। कंक्रीट के जंगल में तब्दील हो चुके शहरों के मकान भीषण गर्मी में किस तरह भट्टी में तब्दील हो जाते हैं, यह हमसे छिपा नहीं है। लेकिन मिट्टी और वनस्पति से युक्त ये छतें सीधी धूप रोककर अवरोधक का काम करती हैं, जिससे बिल्डिंग का तापमान कम हो जाता है। माना जाता है ग्रीन छतों द्वारा 20 से 30 फीसदी तक उर्जा की बचत संभव है। आमतौर पर जब बरसात का पानी खाली छतों पर गिरता है तो उसकी बर्बादी होती



है परन्तु ग्रीन छतें पानी सोखती हैं और 30 से 50 फीसदी तक पानी की बचत हो सकती है। भारत दुनिया का पाँचवा बड़ा कार्बन उत्सर्जक देश है। देश बड़े पैमाने पर बिजली संकट का सामना कर रहा है जो समय आने के साथ और बढ़ेगा। पानी के स्रोत सीमित हैं पर जनसंख्या तेज़ी से कई गुणा बढ़ चुकी है। वर्ल्ड बैंक का आकलन है कि अगले दो दशकों में भारत ने अगर पानी प्रबंधन के लिए गंभीर पहल नहीं की तो गहरा संकट पैदा हो जायेगा।

कादम्बिनी (अप्रैल 2010)